B.A (Hons) part-2.

Subject-Hindi

Paper-(4)

UG

Topics - नई कहानी आन्दोलन में मन्नू भंडारी का योगदान।

Dr.Prafull kumar,HOD, Hindi Department RRS College Mokama PPU Patna.

Dt.10/01/2022

मन्नू भंडारी(3 अप्रैल1931-15 नवंबर2021)एक सशक्त भारतीय रचनाकार सिद्ध हुई,जिन्हें लेखन का संस्कार जाने माने लेखक पिता-सुख सम्पतराय से विरासत में मिला और तथ्यों को सधे वाक्यों में पिरोने की क्षमता कुशल शिक्षिका होने के फलस्वरूप लगातार विकसित होते गई।उन्होंने 1950 ई० से अब तक अनेक महत्वपूर्ण रचनाओं से हिन्दी-साहित्य जगत को समृद्ध किया।

नई कहानी आंदोलन में विशेष योगदान देने वाली मन्नू भंडारी ने अपनी रचनाओं में सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण किया है।उन्होंने नारी जीवन के साथ अन्य विभिन्न वर्गों के जीवन की विसंगतियों को विशेष रूप से अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त करने की सफल कोशिश की है। इनकी रचनाएं अपने आप में विशिष्ट हैं।उनकी रचनाएं हिन्दी साहित्य जगत की अमूल्य धरोहर हैं।उन्होंने अपनी रचनाओं में सामाजिक और पारिवारिक रिश्तो को जिस प्रकार से विकसित किया है,वह अतुलनीय है।सरल एवं सहज भाषा उनकी रचनाओं की विशेषता है।

इनकी रचनाओं में हम स्त्री के सम्पूर्ण चरित्रों का अवलोकन कर सकते हैं।उनका पहला उपन्यास 1 इंच मुस्कान (1961 में प्रकाशित) प्रेम त्रिकोण पर

आधारित है।पहली रचना'मैं हार गई 1957 में लिखी गई) आपका बंटी में प्रेम विवाह तलाक और वैवाहिक रिश्ते के टूटने बिखरने की कहानी है। इसका अनुवाद बांग्ला,अंग्रेजी और फ्रांसीसी में हुआ।आपका बंटी उपन्यास हिंदी साहित्य की एक मूल्यवान उपलब्धि है।इस उपन्यास में मध्यवर्गीय परिवार में संबंध विच्छेद की स्थिति का मार्मिक चित्रण किया गया है।उन्होंने अपने दो उपन्यासों-आपका बंटी और महाभोज के लिए प्रसिद्धि पायी।हिन्दी साहित्य-रचना-अभियान के सुप्रसिद्ध रचनाकार निर्मल वर्मा,राजेंद्र यादव,भीष्म साहनी,कमलेश्वर इत्यादि के अनुसार मन्नू भंडारी इस अभियान की सबसे प्रसिद्ध लेखिका सिद्ध हुई।भारत की आजादी मिलने के साथ सामाजिक,आर्थिक,राजनीतिक परिवर्तन का दौर शुरू हो गया था।देश के सामने हजारों समस्याएं एक साथ खड़ी हो गई थी।भारतीय समाज संघर्ष करता हुआ आगे बढ़ रहा था।ऐसे समय में कोई भी संवेदनशील रचनाकार के मन में विभिन्न प्रकार की समस्याओं के प्रति जागरूकता का होना स्वाभाविक था।वैसे भी मन्नू भंडारी अपने छात्र जीवन से ही जुझारू रही है।उन्होंने अपनी आत्मकथा में इस बात का खुलासा किया है कि वह कॉलेज मैं पढ़ाई के समय राजनीतिक गतिविधियां तेज करने में आगे रहती थी इसके लिए उनके लेखक पिता को भी कई बार शिकायत सुनना पड़ा था।ऐसे समय में उन्होंने नई कहानी और उपन्यासों में नारी जीवन का यथार्थ चित्रण किया है।उन्होंने भारतीय नारियों को सामाजिक,आर्थिक,राजनीतिक दृष्टि से आगे बढ़ाने की कोशिश की है।इनके जीवन्त स्त्री पात्र संघर्षशील हैं।उनमें धुटन है, असह्य पीड़ा है,परन्तु साथ ही आगे बढ़ने के लिए अदम्य साहस और उत्साह भी है।उस समय भारत सामाजिक बदलाव जैसी समस्याओं से जूझ रहा था। नई कहानी अभियान में मनु भंडारी ने भी लैंगिक असमानता,वर्गीय असमानता और आर्थिक असमानता पर आधारित विषय-वस्तु को स्थान दिया है।आजादी के बाद भंडारी महिलाओं से संबंधित समस्याओं, लैंगिक,मानसिक और आर्थिक रूप से महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों को उजागर करती थी।उन्होंने आजादी के बाद की महिलाओं की एक नई छवि का निर्माण की है।सन् 1950ई० से लेकर 2021ई० तक की भारतीय

महिला उत्तरोत्तर विकास की ओर बढ़ती गई है।महिलाओं की जीवन-शैली में निखार आया है।घर और बाहर महिलाओं की स्थिति में बदलाव देखा जा रहा है।अपने समय की समस्याओं के साथ जुझने वाली भारतीय नारियाँ आज बहुत दूर तक का सफर तय कर चुकी हैं। फिर भी महिलाओं की समस्याओं का पूर्णतया समाधान नहीं हो पाया है। इसलिए उनका साहित्य आज अत्यंत प्रासंगिक है।उपन्यास आपका बंटी,महाभोज के अलावा उन्होंने फिल्म एवं टेलीविजन धारावाहिकों के लिए पटकथा भी लिखी।मनु भंडारी को अनेक पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुए।जैसे हिन्दी अकादमी,दिल्ली का शिखर सम्मान,बिहार सरकार, भारतीय भाषा परिषद,कोलकाता, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी,व्यास सम्मान तथा उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा पुरस्कृत।

मन्नू भंडारी की पहचान 'महाभोज' और 'आपका बंटी' जैसे उपन्यासों से बनी।मैं हार गई,तीन निगाहों की एक तस्वीर,एक प्लेट सैलाब,यही सच है,आंखों देखा झूठ,और त्रिशंकु हैं।उनकी लिखी कहानी 'यही सच है' पर 1974ई० में 'रजनीगंधा' फिल्म भी बनी।1979ई० में प्रकाशित उनका उपन्यास 'महाभोज' मील का पत्थर साबित हुआ।जिसमें भ्रष्ट अफ़सरशाही,राजनीति और बिखरते हुए समाज के बीच संघर्ष करते हुए मध्यम वर्गीय समाज की कहानी है।

मन्नू भंडारी की भाषा-शैली सरल,सहज,स्वाभाविक और भावाभिव्यक्ति पूर्ण है।बोलचाल की हिन्दी भाषा के साथ लोक प्रचलित उर्दू,अंग्रेजी,देशज शब्दों का उपयोग स्वभाविक गतिशीलता के साथ की है।उन्होंने वर्णनात्मक और संवाद शैली का प्रयोग सफलता पूर्वक किया है।उनके पात्र छोटे-छोटे,सहज प्रवाहमयी और अर्थ पूर्ण संवादों के द्वारा कहानी की विषय वस्तु को गतिशीलता प्रदान करते हैं।संवादों में काव्यात्मक बोध प्रतीत होते हैं।उन्होंने जिस प्रकार से व्यंग्य, संवेदना और आक्रोश की मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति प्रदान की है,वह अद्भुत है।वाक्य विन्यास छोटे हों या बड़े,सभी व्याकरण सम्मत शुद्ध एवं सरल हैं।पेशे से शिक्षिका होने के नाते उनकी भाषा- शैली में संयम का होना स्वभाविक है।ध्यातव्य है कि 3 अप्रैल 1931 को मध्य प्रदेश के मंदसौर में जन्मी मन्नू

भंडारी सुप्रसिद्ध साहित्यकार राजेंद्र यादव की पत्नी थीं।दिल्ली के प्रतिष्ठित मिरांडा हाउस कॉलेज में वह लंबे समय तक पढ़ाती रहीं।उन्होंने व्यवहार कुशलता के साथ भाषा पर अपना अधिकार रखते हुए अपनी रचनाओं में व्यर्थ की बातों को स्थान नहीं दिया है।सहज स्वभाविक रूप से भाषा-शैली को प्रवाहपूर्ण बनाया है।यही कारण है कि उनकी रचनाएँ सुगम और सुन्दर बन पड़ी हैं ।

मनीषा कुलश्रेष्ठ, सुप्रसिद्ध कथाकार के शब्दों में "उनका होना एक वटवृक्ष जैसा था जिसकी छाया हिन्दी कथा जगत को घेरे थी।आज लग रहा है वह वट गिर गया।हिन्दी कहानी का एक महत्वपूर्ण स्त्री स्वर शांत ज़रुर हो गया,मगर उसकी शाखाएँ हम सब में से फूटेंगी।मन्नू जी मेरी किशोरावस्था से मेरी प्रिय लेखिका रहीं हैं,फिर जब मेरी बेटी कनुप्रिया ने आपका बंटी पढ़ी और अपने कॉलेज निफ्ट के पड़ोस में उनसे मिलने जाना भी तय किया तो मैंने जाना कि मन्नू जी जैसे लेखक कैसे कालजयी होते हैं---उनकी लेखनी पीढ़ियों को छूकर गुजरती थी।मन्नू जी आप बेहद याद आएंगी।"

ज्योतिष जोशी, वरिष्ठ आलोचक ने कहा है- हिन्दी की शिखर कथाकार मन्नू भण्डारी- ने उपन्यास और कहानी के क्षेत्र में बहुमूल्य योगदान दिया और कथावस्तु के साथ शिल्प में भी बहुत महत्वपूर्ण अवदान सम्भव किया।महाभोज,एक इंच मुस्कान और आपका बंटी जैसे उपन्यासों और आँखों देखा झूठ,मैं हार गयी,तीन निगाहों की एक तस्वीर, यही सच है और त्रिशंकु जैसी अप्रतिम कहानियों के माध्यम से उन्होंने जिस समय को रचा और जिस मानवीय विमर्श को सम्भव किया,वह अविस्मरणीय है।उनकी उपस्थिति हमारे साहित्य समाज में लंबे समय तक महसूस की जाएगी। वे उन मूर्धन्य लेखकों में रहीं जिन्होंने अपनी रचनाओं में मानवीय प्रश्नों के साथ राजनीति के अनुत्तरित प्रश्नों को भी उठाया तथा स्त्री को उसकी मुक्ति- संघर्ष के मार्ग भी दिए।

ममता कालिया, वरिष्ठ कथाकार के अनुसार

मन्नू जी एक बहुत बड़ी लेखक होने के साथ-साथ बहुत अच्छी मनुष्य थीं, जो

आज-कल सबसे ज्यादा दुर्लभ होता जा रहा है।मन्नू जी के अंदर मानवता, उदारता, स्नेह ये सब कूट-कूट के भरे हुए थे।उन्होंने बहुत बहादुरी से अपना जीवन जिया है।लगातार उन्होंने नौकरी भी की, टीवी के लिए लिखा, फिल्मों के लिए लिखा और इतनी किताबें लिखीं। उन्होंने अपनी शर्तों पर जीवन जिया यही सबसे बड़ी बात है।"

असगर वजाहत, वरिष्ठ कथाकार के अनुसार **" उनके लेखन को साहित्य की एक तरह की यूनिवर्सिटी कह सकते हैं।उनका लिखा साहित्य एक तरह का लैंडमार्क है।"**

हिन्दी साहित्य की महिला रचनाकारों में महादेवी वर्मा,ममता कालिया,सुधा मूर्ति,महाश्वेता देवी,कृष्णा सोबती,मृदुला गर्ग आदि आधुनिक नारी-साहित्य के प्रमुख स्तंभों में मन्नू भंडारी का अपना विशिष्ट स्थान है।नारी की संवेदनाओं को नारी पुरूषों की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह से समझ सकती है।इसलिए इन नारी साहित्यकारों ने नारी की वेदना,उसकी सामाजिक स्थिति,उसकी विवशता, आकांक्षाओं का जितनी सफलता के साथ पूर्णतया चित्रित कर सकती है,उतना कोई पुरूष रचनाकार नहीं।

मनु भंडारी ने सामाजिक परंपराओं का विरोध करते हुए लेखक राजेंद्र यादव जी से विवाह किया था।'मेरा हमदम मेरा दोस्त'में राजेंद्र यादव ने लिखा है कि औरों की तरह यह घर और मेज कुर्सी ला जुटाने के लिए हम लोग साथ नहीं आए थे। लिखना और अधिक अच्छा लिखने का वातावरण बनाने का विश्वास ही हमें निकट लाया था।कुल मिलाकर मन्नू भंडारी के व्यक्तित्व की पहचान के बारे में उन्होंने स्वयं कहा है-मां,बेटी, बहन,पत्नी,गृह,स्वामिनी,दासी प्रेमिका आदि भूमिकाएँ इसलिए जीवन का अभिन्न अंग बन जाती है।इसके साथ लेखिका, अध्यापिका,प्रतिष्ठित महिला का भी इन सब में मैं दरअसल क्या हूँ तो यूं समझिए कि इन सब का मिलाजुला रूप ही मेरा व्यक्तित्व है और मैं वही बनी भी रहना चाहती हूँ।मनु भंडारी ने लिखा है कि लेखकों ने या तो नारी की मूर्ति को अपनी कुंठा ओं के अनुसार विकृतियों से तोड़ मरोड़ दिया है या अपनी

स्वप्न नारी की तस्वीर उतारी है।वह देवी और दानवों के दो छोरों के बीच टकराती पहेली नहीं,हाड मांस की मानवी भी है।उसे प्राय सभी एक सिरे से नजर अंदाज करते रहे हैं।वह इसके विरोध में अपनी कलम चला कर नारी के आंचल को दूध और उसकी आंखों में आंसुओं के चित्रण में विश्वास नहीं रखती है।नारी के जीवन के यथार्थ को उसी की दृष्टि से जीवन की वास्तविकता के धरातल पर प्रस्तुत करने में सफल हुई है।फलतःउनकी कहानियाँ सजीव होकर जन सामान्य से बातें करने लगती हैं।लेखन उनका व्यवसाय नहीं है बल्कि अनुभूति और चित्रण चिंतन की अभिव्यक्ति है।नारी जीवन व्यर्थ और सुना लगता है उन्होंने आधुनिक नारी को घर की चहाररदीवारी से बाहर निकाल कर कर्म क्षेत्र में लाकर खड़ा कर दिया।यहाँ परिस्थितियों का दबाव भी है और मुक्ति का उल्लास भी।वे स्वयं कामकाजी नारी थी।अतःउन्होंने अपने ही कार्य क्षेत्र से अधिकांश कथा पात्रों को चुना है।उनके सभी नारी पात्र युवा अवस्था में है।शिक्षित है,कामकाजी है।जो स्त्रियाँ बाहर काम नहीं करती हैं,वे पूर्ण रूप से गृहस्थ धर्म निभाती है।वह भी शिक्षित हैं और अपने व्यक्तित्व की पहचान के लिए संघर्ष करती हैं।

'आपका बंटी'उपन्यास में लेखिका ने यह बताया है कि आज की नारी केवल देहयष्टि के सौंदर्य के लिए ही प्रिय नहीं रही है,बल्कि अब न केवल स्वयं अपने पैरों पर खड़ी हुई है,परिवार का भरणपोषण करनेवाली भी है।आज की नारी का आंतरिक संकट चाहे जो भी हो मुक्ति के मार्ग पर अग्रसर है।रिश्तों के दायरे में रहकर वह परिवार और समाज में सम्मान पा रही है।बनते-बिगड़ते रिश्ते बार-बार उसको चुनौती देते हैं फिर भी आज की जुझारू महिलाऐं सफलतापूर्वक आगे बढ़ रही है।आज की महिला का यथार्थ जीवन-चित्रण करने में मन्नू भंडारी सिद्धहस्त कलाकार साबित होती है।

मन्नू भंडारी जैसी स्त्री रचनाकार अपनी प्रभावशाली कथालेखन से अनेक महिला रचनाकारों को जन्म भी दिया है।मन्नू भंडारी ने जिस कथा लेखन को नया स्वरूप दिया,उससे आने वाली पीढ़ी प्रभावित हुई और उन्होंने

कई महिला कथाकारों को प्रेरित किया है।इस संबंध में आजकल मार्च 2021साहित्य और संस्कृति का मासिक पत्रिका पृष्ठ-11 नई सहस्त्राब्दी में स्त्री कथा कारों का रचना संसार लेख में अरुण होता ने लिखा है- हिन्दी कथा लेखन में स्त्री कथाकारों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।मनु भंडारी,ममता कालिया,सुधा अरोड़ा,मैत्रेयी पुष्पा आदि के कथा-संसार ने एक युवा पीढ़ी को प्रेरित किया।नए रंग और नए रूप में स्त्री कथा कारों की युवा पीढ़ी ने कथा लेखन को समृद्ध किया।मधु कांकरिया महुआ माझी,अनिल प्रभा कुमार अल्पना मिश्र,नीला प्रसाद,मनीषा कुलश्रेष्ठ,प्रत्यक्षा,नीलाक्षी सिंह,वंदना राग,पंखुरी सिन्हा,कविता किरण सिंह,गीता जयश्री राय,योगिता यादव,ज्योति चावला,प्रज्ञा,आकांक्षा पारे,काशिव,भूमिका द्विवेदी,इंदिरा दाँगी,ममता सिंह,उपासना आदि चर्चित नाम है तो प्रज्ञा पांडेय,सोनी पांडेय,दिव्या विजय,श्रद्धा थवाईत,सरिता कुमारी,माधुरी, अमिता निरव,नूर जहीर,सिनिवाली,हुस्न तबस्सुम निहां आदि की कहानी लेखन में सक्रियता सुखद है।'

हिन्दी साहित्य जगत में जब भी नई कहानियों की महिला कथाकारों के नाम गिनाये जायेंगे, मन्नु भंडारी का नाम बड़े आदर के साथ लिया जायेगा।।

*****